International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 23-09-2019; Accepted: 24-10-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 6; November 2019; Page No. 60-64

अनवर सुहैल की कविताओं में यथार्थ

कृष्णा डी लमाणि
हिंदी अध्ययन विभाग मानसगंगोत्रि, मैसूरु विश्वविद्यालय, मैसूरु, कर्नाटक, भारत

प्रस्तावना

समाज में अनेक रहस्य छुपे हुए हैं। इन रहस्यों को भेदना और उसमें क्या सत्य छुपा हुआ है उसे पहचानना यथार्थ का ही परिणाम है। यथार्थ का तात्पर्य सत्य से है जो कि निजरुप में सत्य क्या है इसको खोजना ही है। यथार्थ वस्तु के अस्तित्व संबंधि विचारों के प्रति एक दृष्टिकोण ही है जिसे प्रत्यक्ष जगत सत्य मानता है। यथार्थवाद अंग्रेजी भाषा के 'रियलिज्म' का हिन्दी अनुवाद है। 'रियल' शब्द ग्रीक भाषा के 'रेस' शब्द से उत्पन्न हुआ है। इसका अर्थ है – वस्तु। अतः 'रियलिज्म' का अर्थ वस्तु सम्बंधि विचारधारा है। अर्थात जो प्रत्यक्ष रूप से सत्य है वह यथार्थ है। कुछ विद्वानों ने यथार्थवाद (रियलिस्म) की परिभाषा इस प्रकार दी है।

जॉर्ज लुकाच अनुसार – " यथार्थवादी साहित्य वही होना चहिए; जिसमें लेखक बिना किसी पक्षपात या भय के ईमानदरी के साथ जो कुछ अपने ईर्द-गिर्द देखता है उसका यथावत चित्रण करें।"1 नगेंद्र के अनुसार – " यथार्थवाद से तात्पर्य उस दृष्टिकोण से है जिसमें कलाकार अपने व्यक्तित्व को यथासंभव तटस्थ रखते हुए वस्तु को, जैसी है वैसी ही देखता है और चित्रित करता है अर्थात् यथार्थवाद के लिए वस्तुगत दृष्टिकोण अनिवार्य है।"2 यथार्थवाद की तुलना अपने भौतिक समाज के सत्य से है। जीवन में होनेवाले ऐसे अनेक प्राकृतिक रहस्य है जो मानव के ज्ञान से परे हैं। पर यथार्थवाद इंद्रियों से अनुभव होनेवाले विचारों को सही मानता है, जो आँखों के बाहर होनेवाले विचार भी है जो यथार्थ होते हैं।

मानव मन भी बहुरूपी है। मनुष्य अपने चहरे पर अनेक तरह के मुखौटे ओढ़ के रखता है जो समय के साथ बदलते भी हैं। इस संसार की उत्पत्ति कैसे हुई? इसके बारे में विज्ञान का मानना अलग है और धर्म का अलग है। लेकिन जो भी हो इस संसार पर जीव जंतु का एकसा अधिकार है। पहले पूरे ब्रह्मांड को ही एक परिवार माना जाता था, पर आज स्वार्थपरक जीवन के कारण संसार अनेक टुकड़ों में बँट गया है और छोटे छोटे परिवार कें रूप में बदल गया है। आज परिवार छोटे – छोटे डिब्बों डिब्बों जैसे घरों में बसने लगे हैं। यह जगत अनेक भागों में विभाजित हो गया है। इतना ही नहीं मानव अपनी स्वार्थ-लिप्सा व अधिकार-लिप्सा के कारण अपने ही कुल का नाशक बन गया है। ऊपरी तौर पर और दिखावे की बातों में मनुष्य अपने ही लोगों को ठगता है। यह समाज के लिए घातक भी है।

साहित्य में भी इस यथार्थ की अभिव्यक्ति हो रही है। एक सजग लेखक समाज में होनेवाले परिवर्तनों को देखता है, समझता है और फिर उसे यथार्थ रूप में अभिव्यक्त करता है। कविता में यह यथार्थ अधिक प्रभावी होता है। विशेषकर हिंदी की समकालीन कविता में यथार्थवादी चिंतन मिलता है। यथार्थवादी कवि समाज के विभिन्न पक्षों को ज्यों का त्यों अभिव्यक्त करता है। उनमें से एक है अनवर सुहैल।

अनवर सुहैल जी ने अपनी कविताओं में समाज के यथार्थ को अपने काव्य के माध्यम से उजागर किया है। यथार्थ परक रचनाओं की भरमार उनके साहित्य में मिलती है। तथ्यात्मक रूप का नमूना हमें इनके काव्य में दिखाई देता है। यथार्थ कड़वा होता है, पर वह सत्य होता है। कोई भी उससे मुँह नहीं मोड़ सकता। जिस संदर्भ की मौजूदगी को अपने जीवन में महसूस किया है उसका प्रतिबिम्भ अनवर जी के काव्यो में देखने को मिलता है। कबीर की भाँति सत्य और धर्मनिरपेक्षता का भाव इसमें हमें महसूस होता है। यथार्थ और नीजता का समीकरण व वास्तविक रूप का होना इनकी कविताओं की एक विशेषता है।

कोयला खदान में कार्यरत अनवर जी के लेखन में सामजिक विसंगतियों की भरमार है। उन्होंने अनेक सामाजिक व धार्मिक समस्याओं की चर्चा की है। देखा जाए तो भारतीय अल्पसंख्यक समुदाय के मन में एक बेचैनि या डर होने का भाव महसूस होता है। यह भाव अनवर की रचनाओं का केंद्र भी रहा है। इनकी रचनाओं में सत्य एक महत्वपूर्ण संगती है। अनवर जी ने अपने जीवन काल में जो कुछ भोगा है उसे अपनी कलम का विषय बनाया है। उन्होंने सामाजिक विषयों को अपनी कविताओं का विषय बनाया है। किसी काल्पनिक विषय को न चुनकर यथार्थ परक विषयों को प्रस्तुत किया है। हर संदर्भ में सहायता, सहानुभूति, अनुकम्पा के मुखौटे पहनकर जो समाजवाद का ढोंग करते हैं उनका पर्दापाश करते हुए इस मुखौटे के पीछे छिपे विकारी चहरे को समाज के सामने रखने का प्रायास किया है। परदे के पीछे छिपा जो सत्य है उसे खोजने का अथक प्रयत्न किया है। इनका यह एक साहसिक कार्य समाज का आयना है । सामान्यतः कोई भी अपने समाज या समुदाय की बुराइयों को दिखाते

नहीं पर अनवर जी उनसे एक कदम आगे जाकर बुराइयों को सुधारने की इच्छा रखते हैं। इसका एक ही मतलब है कि देश की धार्मिक एकता को बढ़ाते हुए समाज को सुसम्बद्ध रूप से समृद्ध बनाना और समाज के हर कु-कृत्य को नाश कर एक अद्‌भुत देश का निर्माण करना है। इनकी कविता में अभिव्यक्त यथार्थ के विभिन्न रूप निम्नलिखित है।

आधुनिक पारिवारिक यथार्थ

परिवार समाज का एक रूप है। परिवार में हर सदस्य एक दूसरे के यश और उन्नति की कामना करते हैं। पूरा संसार एक परिवार कहलाता था पर आज यह परिवार छोटे-छोटे घर जैसे डिब्बों में विघटित हो गया है। परिवार में हर व्यक्ति अपने आप को सुरक्षित महसूस करता है। पारिवारिक जीवन के बारे में एक विद्वान का कहना है – "परिवार परमात्मा की ओर से स्थापित एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा हम अपना आत्मविश्वास सहज ही रूप से बढ़ा सकते हैं और आत्मा के सतोगुण को परिपुष्ट कर सुखि, समृद्ध जीवन प्राप्त कर सकते हैं। मानव जीवन का सर्वांगीण विकास व सुव्यवस्था के लिए पारिवारिक जीवन प्रथम सोपान है। मनुष्य केवल सेवा कर्म और साधन में ही पूर्ण शांति प्राप्त कर सकता है।"

जब पूरा दिन काम कर माता पिता घर लौटते है तो अपनी संतान को देखकर उनकी पूरी थकान दूर हो जाती है। दूसरी और संतान के जीवन में कोइ परिशानी या कोइ आपत्ति आए तो अपने माँ-बाप से सलाह लेते है और वे बुजुर्ग अपने जीवन के तजुर्बे से उस समस्या का हल निकालते हैं। परंतु आज के समाज में ऐसे परिवार कहाँ जो अपने बूढ़े माँ-बाप को अपने साथ रखते हो। उन्हें अपने जीवन का बोझ समझकर और एक मुसीबत मान कर शहरों में स्थित वृद्धाश्रमों में दाखिल कराया जाता है। तनाव के कारण इस दौर में बच्चे अपने माँ-बाप को अपने साथ नहीं रखते। अनवर जी इसकी ओर इशारा करते हुए कहते हैं --

"बच्चे अब बुजुर्गों को/ नहीं रखते साथ/ बच्चों के पास नहीं है वक्त
खुद अपनी खातिर/ बढ़ती इस आपाधापी के दौर में फिर भला कैसे
अपने पास/
बचे समय बूढ़ों के लिए खामखा माथा चटवाने के लिए॥"3

आधुनिक युग में पारिवारिक संबंधों में इतना उत्साह व विश्वास नहीं रहा है जो पहले था। परिवारों में अब प्रेम स्नेह कम होता जा रहा है। माता पिता और बच्चों के बीच का प्रेम संबंध में भी कमी आती जा रही है। बच्चों और पिता के मध्य का खेल, खुशियों का प्रमाण भी अब कम होता जा रहा है। पहले लोग किताबों से दोस्ती रखा करते थे। ज्यादा से ज्यादा समय किताबों के साथ बिताया करते थे। घर या कार्यालयों में कोई किसी भी प्रकार के कार्यक्रम बनाया जाए उपहार में प्रसिद्ध किताबें की भेंट स्वरूप दे दी जाती थी। पर आज उसकी जगह 'मोबाइल' 'वीडियो गेम' जैसे यंत्र हथिया ली है। इनके इस्तमाल से पारिवारिक सम्बंध में दूरी बढ़ने लगी है। घर में एक ही कमरे में बैठे बच्चे व पोषकों के बीच में बात-चीत भी नहीं हो पाती। मल्टीमीडिया के कारण भी इस तरह की भावनाएँ आहत हो रही है। एक ही जगह पर बैठे परिवार के सदस्य अपने अपने मोबाइल पर उंगलियाँ चलाते हुए अपने ही दुनिया में व्यस्त रहते हैं। हर कोई कही दूर बैठे अपने अनदेखे दोस्त के साथ चाटिंग करते रहता हैं पर बगल में बैठे अपने परिवार से उखड़े रहते हैं। इससे पारिवारिक सम्बंध में द्वेश, घृणा जैसे नकारात्मक भाव उत्पन्न हो गए हैं। अनवर सुहैल जी आज के परिवार के इस यथार्थ को इन शब्दों में अभिव्यक्त किए हैं –

"डिजिटल इण्डिया का हासिल बस इतना है
खत्म करना है एक जी बी डेटा प्रतिदिन
सोते उंठते चेक करते रहना है नोटिफिकेशन ॥"4

युवा वर्ग मोबाइल की दुनिया में इतना खो गया है कि उसे न तो परिवार की पड़ी है ना ही अपनी। उनका बस यही काम है कि अपना डेटा खतम करें। मोबाइल में अनेकों एप डाउनलोड कर उसी में व्यस्त रहता है अपने परिवार के समस्याओं पर भी ध्यान नहीं देता। सोशल मीडिया पर एक्टिव रहते है पर निजी जीवन में जडत्व भाव का पालन करते हैं। सोशल मीडिया पर आनेवाले हर मुसीबतों का समाधान सोचते रहते है। लडकियाँ भी घर के अपने काम धाम छोड़कर मोबाइल में व्यस्त रहती है। घर में भाई-बहन माँ-बाप का साथ रहते हुए भी अकेलापन का भाव अधिक दिखता है। सब के रहते हुए भी घर में अकेले-अकेले ही बैठे रहते हैं। अपने सामने कौन है क्या कह रहा है यह सब भूल कर अपने मोबाइल को ही अपना संसार मानकर उसी के साथ २४ घंटे बिताते रहते हैं। इस बात अपर अनवर जी अपनी कविता में हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं। दृष्टांत है –

"आज भी बिटिया साथ है लेकिन वह
अपने फोर्जी सेट पर उँगलियाँ दौड़ा रही है
आज कल जरूरी है अनलिमिटेड डेटा पैक
और लम्बे समय का बैटरी बैक-अप
फिर जैसे रिश्ते-नाते, दुलार-प्यार की जरूरत नहीं ॥"5

वृद्धावस्था का यथार्थ

परिवार व्यवस्था में माँ-बाप जब तक अपनी देह में शक्ति होती है तब तक सबका बोझ उठा लेते हैं। अपने बच्चों की हर जरूरतों को अपनी जरूरतों से भी ज्यादा मानते हैं और उन्हें पूरा करने के लिए जी-जान की बाजी लगा देते हैं। लेकिन जब वे जीर्ण हो जाते हैं जब उनका शरीर अशक्त हो जाता है तब बच्चों का यह कर्तव्य बनता है कि उनके अंत तक उनका खयाल रखें, उनकी देखबाल करें। जब बच्चे

अपनी जिंदगी जीने के लिए सशक्त हो जाते हैं, जब उनका अपना ही एक परिवार बन जाता है। और वे इस नये परिवार से अपने खुद के माँ-बाप को दुत्कारने लगते हैं। जो माँ-बाप संतान के आने के बाद अपने परिवार को परिपुर्ण समझते हैं लेकिन वही संतान उन्हें परिवार से बाहर फेंक देते है। संतान अपने पोषकों को अपने परिवार का हिस्सा नहीं मानते। उन बूढ़ों को अमानवीय दृष्टि से देखकर जानवरों का भाँति अनुपयोगी मानकर घर से बाहर निकाल दिया है और ऐसी स्थिति में आज वृद्धों की स्थिति दयनीय है। वृद्धाश्रमों में आज वृद्धों की संख्या दिन ब दिन बढ रही है। अनवर सुहैल समाज के इस यथार्थ से अवगत कराते हुए कहते हैं,

"है कठिन समय ऐसा यह / कब बुढ़ापे की लाठी
नहीं बनना चहता कोई / भूमंडलीय बजार की ताकतें
लगी है तोड़ने लाठी का सहारा ॥"6

बुढ़ापे में शरीर अशक्त और कमजोर हो जाने के कारण उसे सहारे की आवश्यकता होती है। प्रेम और सहानुभूति की जरूरत होती है। प्यार से बात करने की ललक होती है। उन्हें किसी न किसी के सहारा आवश्यक होती ही है। पर सहारा अपनी आजादी छीन लेता है। घर के सारे फैसले खुद लेनेवाला आदमी को अब किसी के फैसले को मानकर चलना पडता है और अगर नहीं माने तो उसे घर से बाहर निकाल देने की दहशत होती है। इसमें भी जब अपने बच्चे ज्यादा हो तो बच्चों में ही एक मत न होकर वे अपने माता-पिता को वस्तु के भाँति देखने लगते है और उन्हें दिनों के या महीनों के हिसाब से पालने की शर्त बना लेते है। तब अनवर जी की यह पंक्तियाँ बूढों के इस यथार्थ स्थिति पर प्रकाश डालती है । --

"लेकिन बुढ़ापा सहारा खोजता है / और सहारे आजादी छीन लेते हैं।
अब्बा बेटे-बेटी के घर / पारा-पारी दिन गुजारने को
अभीशप्त हो गए॥"7

ऐसा नहीं है कि बच्चे यह जान बूझकर करते हैं। पर समय ही ऐसा आया है कि वे अकेले तनाव भरे माहौल में जीवनयापन कर रहे हैं। आज की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों के चलते हमारे परिवारों में एक दूरी आयी है। मजबूर होकर उन्हें वृद्धाश्रमों में रखाजाता है। वृद्धों को दूर रखना भी महानगरों के हितवालों का स्वार्थ भी है और शान भी। दृष्टाव्य है। –

"ऐसा नहीं है कि / बच्चे नहीं जानते
अपनी सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारियाँ
लेकिन बाजार उन्हें बना देता डीठ उन्हें इतना
कि वे हटा देते दैनिक जरूरतों से अपने बुजुर्गों की उपस्थिति॥"8

धर्मिक यथार्थ

वर्तमान समय में भारत देश में धर्म संवेदनशील मामला हो गया है। एक धर्म के प्रति दूसरे धर्म के लोगों में सहिष्णुता का भाव खत्म होता जा रहा है। जैसे जैसे मानव यांत्रिकता से अत्याधुनिक हो रहा है वैसा ही वह असहिष्णु होता जा रहा है। धर्म के नाम पर मानव जो खेल खेल रहा है वह इस समाज के लिए मारक ही सिद्ध होता जा रहा है। एक धर्म दुसरे धर्म का सम्मान करने की बजाय उसकी अवहेलना कर उसको मिटाने की साजिश रच रहा है। धर्मरक्षण के नाम पर विध्वंस ही मचा रहा है। पर कहा जाता है कि हम शांति प्रिय है, शांति की स्थापना हेतु यह विरोध व विध्वंस हो रहा है। युवा लोगों को व समाज को गुमराह करके कुछ धर्मांध लोग समाज में धार्मिक लड़ाइयों के कारण बन जाते हैं। और तमाम लोग भी इन्हीं के पीछे रहते रहते हैं। ऐसे लोगों का कटाक्ष करते हुए अनवर जी लिखते हैं –

"पागल पन जब / पहन लेता है धर्म के कपड़े
तब मोक्ष की आस / उसे विध्वंश के लिए प्रेरित करती है
सभी इस हकिगत को मनते हैं / फिर भी पागलों को कपड़े
पहनाने के लिए बेचैन है॥"9

आज जनता को बिना किसी वजह झगडों में फंसाया जाता है। लडाई झगडों के लिए उकसाया जाता है। धर्म के नाम असहिष्णुता का भान इतना अधिक हो गया है छोटी सी छोटी बात को साम्प्रदायिकता का नाम दिया जाता है और फिर लाशें बिछ जाती है। वर्तमान में प्राप्त होनेवाली इस वास्तविकता को अनवर जी अपनी कविता में कलमबद्ध करते हैं।

"हम खुद हत्या नहीं करते / कि आ जाएँ कानून के दायरे में
ऐसी स्थिति बना देते हैं / कि गिरने लगते हैं लाशें इतनी
कि हम गिनना भी जरूरि नहीं समझते ॥"10

अनवर जी इस तरह के धार्मिक भेद को छोड़कर ईश्वर/अल्लाह से बने इस करीश्मे को बरकरार रखने के लिए सभी धर्म के लोगों में भाईचारे का भाव उत्पन्न करने के लिए आह्वान करते हैं। यह धरती हर किसी को एक ही तरह का अधिकार देती है और इस अद्भुत पृथ्वी को सुंदर बनने की इच्छा को इस प्रकार प्रकट करते हैं –

"क्या करें हम जो सतरंगे ख्वाबों के चितेरे हैं / आओ, कुछ लोग आओ
आगे तो हम मिलजुल
दूसरे रंगों को बचाने की मुहीम छेड़ेंगे / और बेशक इक दिन हम सब
सारे रंगों को बचा कर बिखेर देंगे ऐसे / जैसे कोइ इंद्रधनुष सा टंगा हो
जैसे॥"11

संसार में ऐसा कोई नियम नहीं की आप अमुक अमुक से ही स्नेह या मित्रता रखें। यह तो प्रत्येक व्यक्ति की अपनी सोच और समझ है। मनुष्य प्रेम का भूखा होता है जहाँ उसे स्नेह मिला जहाँ उसे प्रेम मिला उस ओर खीचा चला जाता है। जो व्यक्ति हमारे साथ रहता है, हर वक्त जिसकी मौजूदगी होती है उससे दोस्ति होनी सामान्य बात है। चाहे वह सधर्मी हो या अन्य धर्मी। किंतु धर्मकट्टर दूसरे धर्म के लोगों से मित्रता धर्मबाह्य समझते हैं। किंतु अनवर सुहैल धर्मिक बंधनों को परे रखकर अपने भाव को साझा करने की बात करते हैं। -

“मैं तुम्हीं से कर सकता हूँ साझा / अपनी ये चिंताएँ दोस्त
और आगाह भी करना चाहता हूँ / कि वे लोग उन्हें भी तलाश रहे हैं
जो मेरे साथ हैं / जो मेरे आस पास हैं॥“12

राजनैतिक यथार्थ

अनवर सुहैल कविताओं में समकालीन समाज की विसंगतियों को प्रस्तुत करते हैं। यह इसलिए भी हुआ है कि कवि अपने समकाल में जीता है। समकालीन समस्याएँ ही उन्हें लिखने के लिए मजबूर किया करती हैं। अनवर सुहैल कविताओं में यथार्थ का स्पष्ट चित्रण प्रस्तुत करते हैं। उनकी कविताओं में किसी प्रकार का दुराव या छुपाव नहीं दिखाई देता। वास्तविकता को निर्भीक रूप में प्रस्तुत करना कवि का ध्येय है। उनकी चिंता के केंद्र में मेहनतकश आम जन हैं। स्वतंत्रता के कई वर्षों बाद भी आम वर्ग किस प्रकार अपनी मौलिक आवश्यकताओं को ही पूर्ण करने में सक्षम नहीं हैं यह उनकी चिंता का विषय है. साथ ही उनकी कविताओं में यह भी स्पष्ट है कि किस प्रकार सत्ताधारियों के चिंतन में अभाव से पीड़ित जनता नहीं है।

“दुर्भाग्य ग़ुरबत की मारी
जनता रोवै बेचारी मांगे रोटी और बिछौना
मिले आश्वासनों का खिलौना।।”

उनकी दृष्टि हाशिये के लोगों पर भी गयी। अनवर सुहैल ने कविताओं के माध्यम से भारतीय मुस्लिम परिवेश में व्याप्त एक अनजाने डर को भी आवाज़ देने का प्रयत्न किया है। उनकी विशेषता यह है कि उन्होंने ‘अल्पसंख्यक वर्ग’ की आन्तरिक और बाहरी दोनों समस्याओं पर बात की है। उनकी सेकुलर दृष्टि उन्हें अल्पसंख्यक या बहुसंख्यक के पक्षधर होने से कोसों दूर रखता है।

आंदोलन की सफलता नेता की कार्य सिद्धि नहीं देखी जाती बल्कि आंदोलन में भाग लिए उस जन समुदाय की संख्या से की जाती है। जिस आंदोलन में ज्यादा लोग होते हैं वह आंदोलन सफल कहलाता है। अनवर जी इन स्वार्थी नेताओं व उनके चेलों के ओर इशारे करते हुए कहते हैं -

“बुर्के और टोपियाँ / भीड़ की शक्ल में / बिना अक्ल के / आ जुटती है
यह सब गिनती के अलावा और क्या है / जबरन शामिल किया जाता है इन्हें
आयोजन को सफल बनाने के लिए ही ना !”13

“इल्म और हुनर से दूर / अनथक दिहाड़ी खटती टोपियाँ
अपने बुर्के के लिए दो रोटियाँ / और कभी-कभी दो रोटियाँ
कमा ले आये तो जैसे / अल्लह उनपर खूब महरबान ॥“14

आज सभा सम्मेलनों में लोगों की संख्या दीखाने के लिए जिसे मैनपॉवर कहा जाता है, उसको बस दिखावे की खातिर लोगों को बहलाया जाता है। अनेकों अनेक प्रकार के आश्वासन दिया जाता है। उन्हें स्वर्ग का सपना दिखाया जाता है। अनवर जी उन आश्वासन देनेवाले लोगों की इस नीति का विरोध करते हैं और कहते हैं कि अब लोगों को लालच भाता नहीं ना ही वे सुनहरे सपने जो दिखाए जा रहे हैं.. देखिए

“नर्क भले ही जैसा था / हमने उसमें बसने का बना लिया मन
और ठुकरा दिया तुम्हारे स्वर्ग को / उन लुभावने सपनों को
जिसे दिखलाते रहे तुम और तुम्हारे दलाल / और जिस स्वर्ग के लालच में
फंसती रही / हमारी कई कई पीढ़ियाँ॥“15

अनवर जी कठोरता के साथ उन लोगों का विरोध करते हैं जो इन दलाल व भ्रष्ट नेताओं का साथ देते हैं। वे भ्रष्ट नेतागण नासमझ लोगों के भरोसे ही अपनी कॉलर ऊँची करते रहते हैं। और अपनी मूँछों को एंठते रहते हैं। पर इसका सही रूप सामान्य जनता समझने का प्रयास भी नहीं करती। यह जनता हुकूमतों की चंगुल में आ जाती है और उनके ही इशारों पर चलती रहती है। ये टुकड़खोर कोई भी हो सकते है ग्वाले, अनपढ, या डिग्रियाँ हासिल किए हुए पढ़े लिखे युवा। दृष्टव्य है –

“हुकुमतें तलाशती रहती है ऐसे टुकड़खोर / ये गवैये भी हो सकते हैं बजईये भी
लिखईये भी हो सकते हैं, पढ़ईये भी / बड़े जतन से छुपाये फिरते हैं ये
अपनी कमर पर लगाई गई पूँछ / विश्वविद्यालयों की डिग्रियाँ कोरी हैं
इस एक गूपन अंग के बिना / इन्हीं टुकड़-खोर गुलामों की पूँछ
बचाए रखती हैं इनकी मूँछों की ऐंठन ॥“16

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि अनवर सुहेल अपनी कविता के माध्यम जमीनी यथार्थ को अभिव्यक्त करते हैं। उनकी यथार्थपरक अभिव्यक्ति में सहजता हैं लेकिन वही एक करारा तमाचा भी है। देसी भाषा के गंध में अभिव्यक्त उनका सामाजिक यथार्थ बहुत प्रभावी है। उनकी कविता में परिवार, धर्म, राजनीति तथा सामाजिक यथार्थ के विभिन्न रूप मिलते है। उनकी अभिव्यक्ति में कहीं-कहीं बहुत कठोरता

भी है। लेकिन वह बहुत आवश्यक भी है। अनवर सुहैल अपनी कविता में सत्य की खोज के लिए प्रयासरत दिखाई देते हैं। उनकी यह दृष्टि कविता में नवीनता और ताजगी का अनुभव कराती है। उनका स्वप वैविध्यपूर्ण है। एक मूसलमान कवि होने के नाते भी उन्होंने कविता का में राजनीति में धर्म क लेकर की जानेवाली राजनीति के यथार्थ को भी चित्रित किया है। कविताओं के अलावा उनके कथासाहित्य यथार्थ का स्वरूप बहुत प्रभावी है।

संदर्भ सूचि

1. श्री रमाशंकर केवट, धुमील का काव्य और यथार्थवाद, गोवा विश्वविद्यालय तालेगाँव, गोवा - पृ. सं. - 54
2. वही – पृ सं – 55
3. अनवर सुहैल, उम्मीद बाकी है अभी, क्स्प्रेश पुब्लिशिंग – पृ. सं – 11
4. वही – पृ. सं – 17
5. वही – पृ. सं – 81
6. वही – पृ. सं -11
7. वही – पृ. सं - 51
8. वही – पृ. सं – 11
9. वही – पृ. सं – 07
10. वही – पृ. सं – 21
11. वही – पृ. सं – 22
12. वही – पृ. सं – 23
13. वही – पृ. सं – 38
14. वही – पृ. सं – 39
15. वही – पृ. सं – 47
16. वही – पृ. सं – 77